राजनैतिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक चिंतन का साप्ताहिक समाचार पत्र

प्रज्ञा शनि नेशन्स टाइम्स

संस्करणः नई दिल्ली व पाली राज. 13 अक्टूबर 2011 - 19 अक्टूबर 2011, वर्ष : 8, अंक : 46,
साप्ताहिक, मूल्य : 2 रुपये, वार्षिक सदस्यता शुल्कः 250/-

shaninationstimes@ gmail.com

web : www.shanidham.in
www.facebook.com/ shreeshanidham

दाती संदेश

व्यग्रता की व्यथा मिटाने के लिए शुरू कर दो आभ्यंतरिक साधना - दाती श्री

मित्रो, सुखों की उपलब्धि के लिए नाना प्रकार के उपाय करने के बावजूद हम सुखी नहीं हो पाते। कारण स्पष्ट है कि अल्प अवधि के लिए प्राप्त होने वाले सुख हमें खुशी से अधिक व्यग्रता दे जाते हैं। इंद्रियों के द्वार से वासनाओं की बयार आकर बार-बार हमारे मन को क्षुब्ध करती है और उसे इधर-उधर दौड़ने के लिए हमेशा प्रेरित भी करती रहती है। इसके लिए इंद्रियों का दमन करने की जरूरत नहीं बल्कि मनोनिग्रह की जरूरत है। परंतु मनीषियों द्वारा इंद्रिय दमन का जो अर्थ सामान्य रूप से आजकल लगाया जाता है, वह सही नहीं है। क्योंकि इंद्रियों को दबाकर मनोनिग्रह नहीं किया जा सकता है। हमें इस गलत धारणा को छोड़ना होगा।

व्यापक रूप से यह गलत धारणा हमारे भीतर मौजूद है। जब भी हम सोचते हैं, इंद्रियों को वश में करना, तो कोई संघर्ष, कोई युद्ध, कोई लड़ाई, कोई भीतर कलह का ख्याल आता है। जब भी हम सोचते हैं, मन का निग्रह करना है, तो कोई जबरदस्ती करने का विचार उठता है, कोई दमन करने का ख्याल मन में आता है। वे बड़े गलत ख्याल हैं। और जो व्यक्ति भी अपने इंद्रियों को दुश्मन की तरह वश में करने जाएगा, वह मुसीबत में अवश्य पड़ेगा। वह अपने मन का मालिक तो कभी न हो पाएगा, हां, विक्षिप्त अवश्य हो सकता है। और जो व्यक्ति जबरदस्ती अपने मन को ठोंक-पीटकर वश में करने की चेष्टा में लगेगा, उसका मन विद्रोही हो जाएगा, मन बगावती हो जाएगा, और मन उसे ऐसी जगह ले जाने लगेगा, जहां-जहां वह चाहता है कि मन न जाए।

जहां-जहां चाहेगा कि न जाए मन, वहां-वहां जाने लगेगा। जहां-जहां रोकेगा मन, मन वहां-वहां और भी बहकने लगेगा। मनुष्य अपनी इंद्रियों को जितनी जबरदस्ती दबाएंगा, वह उतना ही अधिक इंद्रिय लोलुप होता जाएगा। इसलिए अक्सर ऐसा हो जाता है कि अगर कोई जबरदस्ती अपने ऊपर ब्रह्मचर्य को थोपने बैठ जाता है, तो उसके चित्त में कामवासना इतनी भयंकर हो जाती है कि वह तूफान का रूप ले लेती है, उतनी कामवासना किसी गहरे से गहरे कामी के मन में भी नहीं होती। आपको पता होगा, अगर किसी दिन उपवास करें, तब आपको पता चलेगा कि भोजन की याद उपवास के दिन ही आती है। सामान्य दिनों में भोजन की कोई याद नहीं आती है। आदमी जब भोजन कर लेता है तब भोजन को भूल जाता है।

जबरदस्ती किसी चीज को रोका जाए, तो वह स्मृति में गहन हो जाती है। जोर से आती है, प्रगाढ़ हो जाती है। उसका बल, उसकी ताकत बढ़ जाती है। इसलिए हमारे प्राचीन मनीषियों द्वारा धर्मग्रंथों में बार-बार प्रयुक्त इंद्रिय-निग्रह या मन-निग्रह जैसे शब्द जबरदस्ती की जाने वाली क्रियाएं नहीं हैं, ये वैज्ञानिक विधियां हैं। यह समझने वाली बात है, जबरदस्ती मानने वाली बात नहीं है, यह दमन जैसी कोई बात नहीं है। लेकिन हम लड़ते रहते हैं। एक आदमी को क्रोध आता है, तो वह क्रोध को दबाता है कि क्रोध करना अच्छा नहीं है। शास्त्र में पढ़ा है, गुरुओं से सुना है, क्रोध करना बुरा है। क्रोध आता है, अब वह क्या करे? उसे दबा लेता है। जिस आदमी को यह वहम हो कि मैंने क्रोध पर काबू पा लिया है, उसके रोएं-रोएं में आप क्रोध को झलकता हुआ देखेंगे। जिस आदमी को ख्याल हो कि मैंने संसार को लात मार दी है, संसार को छोड़ दिया है, त्याग कर दिया है, उसको अगर आप थोड़ा भी गौर से देखेंगे, तो उसे इस संसार में इतनी बुरी तरह फंसा हुआ पाएंगे, जिसका हिसाब नहीं। संसार नहीं होगा उसके चारों तरफ, तो भी फंसा हुआ पाएंगे।

अगर हम अपने मन के अंदर कोई भी बात दबाते हैं तो वह हमारे अंदर तनाव का जहर घोल देती है। कोई भी प्राणी जब प्यासा होता है तो पानी की तलाश में व्याकुल हो जाता है। जबतक उसे पानी उपलब्ध नहीं होता उसे चैन नहीं मिलता। पानी के लिए दौड़भाग करने या पानी पर व्याख्यान देने से या सुनने से किसी की प्यास नहीं बुझती। प्यास बुझाने के लिए पानी की मूर्ति से काम नहीं लिया जा सकता है। उसके लिए साक्षात पानी उपलब्ध कर उसे पीना पड़ता है।

आपने मृग मरीचिका व मृग तृष्णा आदि शब्द सुने होंगे। कहते हैं जब रेगिस्तान में गर्मी पड़ती है तो वहां की हवा हल्की होकर ऊपर उठ जाती है। इस वजह से हवा की सघनता कहीं अधिक कहीं कम हो जाती है। इसलिए सघन माध्यम से

शेष पेज 14 पर

व्रत-त्यौहार 15 अक्टूबर से 21 अक्टूबर 2011 तक

(कार्तिक कृष्ण तृतीया से नवमी तक)

दि.	वार	तिथि	नक्षत्र	चन्द्र राशि	विशेष
15	शनि	तृतीया	कृतिका	वृष	श्री गणेश चतुर्थी, व्रत करवा चौथ, करक चतुर्थी
16	रवि	चतुर्थी	रोहिणी	वृष	....
17	सोम	पंचमी	मृगशिरा	मिथुन	....
18	मंगल	षष्ठी	मृगशिरा	मिथुन	.....
19	बुध	सप्तमी	आर्द्रा	कर्क	अहोई अष्टमी चंद्र उदय व्यापिनी
20	गुरु	अष्टमी	पुनर्वसु	कर्क	अहोई अष्टमी व्रत (प्रदोष काल व्यापिनी), राधाष्टमी
21	शुक्र	नवमी	पुष्य	कर्क	.....

प्रज्ञा की संपूर्ण प्रस्तुति : श्री शनिधाम शिक्षा एवं शोध संस्थान, श्री शनिधाम ट्रस्ट , असोला फतेहपुर बेरी, महरौली, नई दिल्ली। फोन : 26653500, 26654400, Web Site : www.shanidham.in E-mail: shaninationstimes@gmail.com

मैं अपनी पुत्री की शादी के लिए बहुत चिंतित हूं। कोई सही रिश्ता नहीं मिल रहा है। वह अपनी पढ़ाई जारी रखना चाहती है जो मुझे अच्छा नहीं लगता। जवान लड़की का अकेले कालेज जाना मुझे खलता है। कृपया, उचित सलाह दें कि मैं क्या करूं। कुंडली देखकर यह भी बतायें कि शादी कब होगी और क्या उपाय करूं।

- सलिल कुमार

आपकी पुत्री का सिंह लग्न व मीन राशि है। इस समय इन्हे केतु की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा है। इनका समय बहुत अच्छा चल रहा है। पैसे की वजह से पढ़ाई नहीं छूटेगी पुत्री को पढ़ने दो, पढ़ाई की वजह से ही इनकी शादी किसी अच्छे घर में हो जायेगी।

इसकी शादी का योग नवम्बर तक बन रहा है, यदि आप शादी करना चा. होगे तो शादी हो सकती है।

इनका स्वास्थ अब जल्दी ही ठीक हो जायेगा क्योंकि गोचर में ग्रहों की स्थिति अब अच्छी हो गई है। वे मंगलवार को हनुमान जी को चमेली के तेल में सिंदूर घोलकर समर्पित करवाएं। यदि ये व्रत करना चाहे तो मंगलवार का व्रत करे, केतु का मंत्र जाप करे ।

ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः।।

आप अपनी समस्याएं हमें सादे कागज पर निम्न जानकारी के साथ लिख कर भेज सकते हैं।

नामः ....

पता : ....

दूरभाष : ....

जन्म तिथि : ....

जन्म समय : ....

जन्म स्थान : ....

आपका प्रश्न : ....

....

एक पत्र में केवल एक प्रश्न ही लिखें। प्राप्त समस्याओं के उत्तर हम आगामी अंकों में प्रकाशित करेंगे। प्रश्न के साथ एक 5 रु. का टिकट लिखा जवाबी लिफाफा अवश्य भेजें।

भेजने का पता :

अंतरराष्ट्रीय वैदिक ज्योतिष विकास व अनुसंधान संस्थान

श्री शनि तीर्थ क्षेत्र, श्री शनिधाम, असोला,

फतेहपुर बेरी, महरौली, नई दिल्ली-30

फोन : 26653600, 26654400

फैक्स / फोन : 26653500

श्र-स्ड्ढद्वद्य- ह्यद्भड्ढठ्ठद्भस्न.द्भड्ढञ्चद्दद्बड्ढद्य.ष्ठद्ब

इस पृष्ठ की सभी सामग्री अंतरराष्ट्रीय वैदिक ज्योतिष विकास व अनुसंधान संस्थान।

वास्तु शास्त्र : परिचय व महत्व

क्रमागत

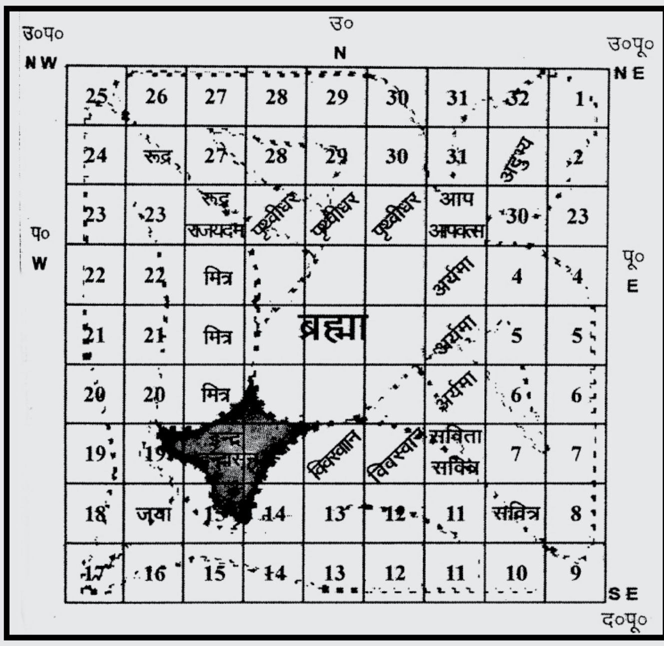

भवन निर्माण जीवन को व्यवस्थित बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। इसलिए उत्तम आवास सुख-समृद्धि का प्रतीक माना जाता है। वास्तुविद् अपनी योग्यता और निर्माण कौशल से भवन को ऐसे रूप में बनाता है ताकि उसमें निवास करने वाले गृह स्वामी सुख-शांति एवं आनंद के साथ अपना जीवन यापन कर सकें।

द्वितीय विधि

जिस भूखण्ड पर गृह–निर्माण कराने का विचार है। उस भूमि पर १½' (फिट) गड्ढा खोदकर उसकी मिट्टी निकाल लेनी चाहिए। उस गड्ढे को मुख तक पानी से भर देना चाहिए। इसके बाद उस स्थान से उत्तर दिशा की और एक सौ कमद चलना चाहिए। चलने से उत्तर दिशा की ओर एक सौ कदम चलना चाहिए। चलने के समय से (१२०) सैकिण्ड गिनकर वापस लौटकर उस गड्ढे का निरीक्षण करना चाहिए –

(1) यदि गड्ढे का पानी बिल्कुल नहीं घटा है तो भूमि उत्तम है।

(२) यदि गड्ढे का पानी आधा है तो भूमि मध्यम है।

(३) यदि गड्ढे का जल पूर्णतया सूख चुका है, बिल्कुल नहीं बचा है तो वह भूमि अशुभ है।

इस प्रकार परीक्षण की द्वितीय विधि से पता चलता है श्रेष्ठ भूमि ढीली नहीं होती मध्यम भमि थोड़ी ढीली और निकृष्ट भूमि पूर्णतया ढीली होती है। वस्तुतः श्रेष्ठ भूमि पर ही भवन–निर्माण करना लाभ: ाकारी व गुणकारी होता है।

भूखण्डों का आकार और फल विचार

प्रत्येक गृह–निर्माता को गृह–निर्माणार्थ भूखण्ड खरीदते समय भूमि का अच्छी प्रकार परीक्षण कर लेना अनिवार्य व लाभकारी होता है। गृह–निर्माण ाार्थ भूमि चयन के समय उसके आकार (Shape) को अवश्य ध्यान में रखना चाहिए।

गृह–निर्माण हेतु – वर्गाकार, आयताकार, गोल, त्रिकाण – आकारों में भूखण्डों के गुण–दोष का विवेचन करता है। भूखण्डों के चयन की समस्या के समाधान हेतु निम्ननिर्दिष्ट बातों पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

क्रमशः

काल सर्प योग : कारण व निवारण के उपाय

क्रमागत

यदि पहले भाव में बैठा केतु अशुभ हो जाये तो इससे जातक के मन मे कई तरह के बहम पैदा होते हैं। प्रायः जातक काल्पनिक चिंताओं में खोया रहता है। पहले भाव में केतु वाला जातक जहां जन्म लेता है, उस घर में, या उस परिवार पर कुछ अशुभ असर जरूर डालता है। जब कुंडली में केतु अशुभ फल देने वाला हो जाये तो इसका पता बुध की चीजों से चलता है। अर्थात् इसका बुरा प्रभाव बहन-बेटी या बुआ-साली पर पड़ता है। इसका तीसरा अशुभ असर मंगल अर्थात् रक्त में किसी दोष से जाहिर होता है।

पहले भाव में केतु हो और दूसरा या सातवां भाव खाली हो, तो बुध और शुक्र दोनों ग्रहों का फल अशुभ हो जाता है। यदि केतु पहले भाव में हो और सूर्य सातवें भाव में तो जातक को शारीरिक कष्ट हो सकता है। ऐसे जातक की हथेली में सूर्य के पर्वत पर केतु का निशान होता है जैसा कि चित्र में दर्शाया गया है।

केतु यदि पहले भाव में हो तो जातक बच्चे पर बच्चे पैदा करता जाता है।

आज की चिंता न कर वह कल पर मरता रहता है। कामदेव की गर्मी और दौलत की चाह, उसे एक साथ खींचती है। वह उत्तम पितृभक्त होता है। बच्चों को गुड़ इत्यादि खरीदने के लिए तांबे का पैसा देना विष देने के समान होता है। बृहस्पति पर मंगल के कमजोर प्रभाव की वजह से जातक को अकारण इधर-उधर परेशानी की हालत में भटकना पड़ता है।

उपाय-

1. बंदर को गुड़ खिलाया करें।
2. काला-सफेद कंबल मंदिर में दान दें।
3. दोनों पांवों के अंगूठों में चांदी पहनें।
4. दानों पांवों पर केसर का तिलक लगाया करें।
5. लोहे की गोली पर लाल रंग करके जातक अपने पास रखें।
6. नारियल मंदिर में चढ़ाएं।

दूसरे भाव में केतु का फल व उपाय

हुई पैदा औलाद हर घर जो तेरी।

बुढ़ापे में तुझे कौन देगा दिलेरी॥

लाल किताब में, दूसरे भाव में स्थित केतु को 'अच्छा हुक्मरान और मुसाफिर' कहा गया है। जिसके दूसरे भाव में केतु हो ऐसे जातक को जीवन में यात्राएं बहुत करनी पड़ सकती हैं। उसके जीवन में बहुत उतार-चढ़ाव आते रहते हैं। मगर अंततः बृहस्पति के प्रभाव की वजह से उसके भाग्य का फल शुभ हो जाता है। संभवतः अपने जीवन में जातक लाखों रुपयों में खेलता है, किन्तु पैसा उसके पास टिक नहीं पाता।

क्रमशः

मानव शरीर की विशिष्ट संरचना

प्राणायाम द्वारा रोगों के उपचार की विधि भी हमारे देश में सदियों से आजमाई जाती रही है। यदि आप प्राणायाम द्वारा रोगों के उपचार का लाभ लेना चाहते हैं तो उसके लिए आपको किसी कुशल मार्गदर्शक की देखरेख में उसकी विधि सीखनी होगी और यह भी जानना होगा कि किस प्रकार के रोगों का शमन करने के लिए किस प्रकार के प्राणयाम का अभ्यास कितनी अवधि तक किया जाता है।

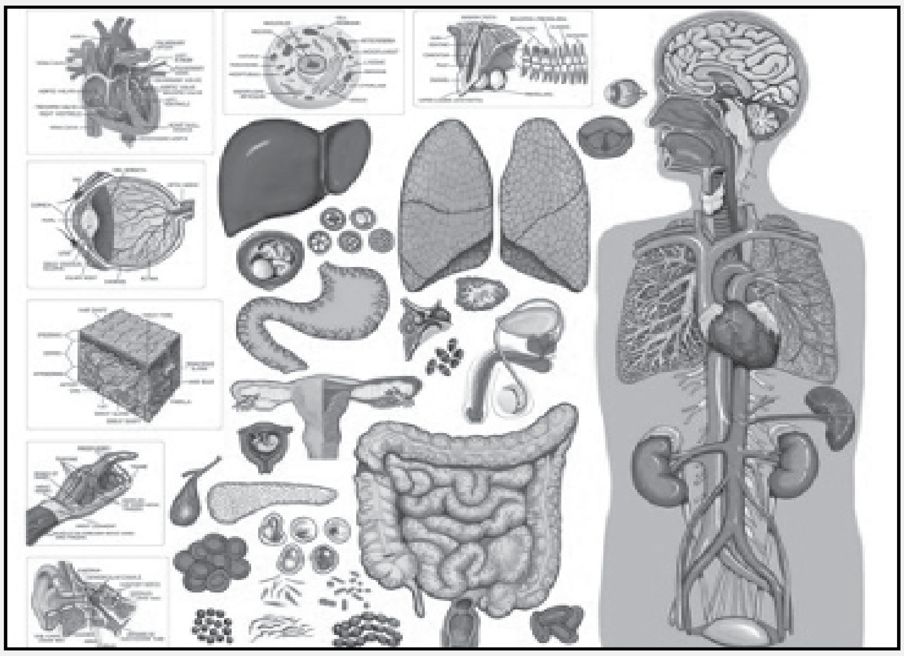

क्रमागत

प्राणायाम का रोगोपचार में उपयोग

मोटापा दूर करने के लिए भी हमारे प्राचीन मनीषियों ने प्राणायाम को बहुत उपयोगी पाया है। इस संबंध में उन्होंने यह स्पष्ट घोषणा की है कि भस्त्रिका प्राणायाम के विधिवत अभ्यास से शरीर का मोटापा कम और पेट पतला हो जाता है। परन्तु इसके अभ्यास में कुछ सावधान रहने की आवश्यकता है। अन्यथा हानि होने की भी प्रबल संभावना रहती है। जो साधक असावधानी बरतते हैं, उनके थूक में खून आने की शिकायत देखी गयी है। उन्हें दमा और खाँसी की भी शिकायत हो जाती है। साधक को दूध व घी की व्यवस्था अवश्य करनी चाहिए। यह प्राणायाम अनुभवी गुरु की देख-रेख में ही करना उचित रहता है। कमजोर व्यक्ति को इसका अधिक वेग से अभ्यास नहीं करना चाहिये, अन्यथा उसके सिर में चक्कर आने की संभावना रहती है। यह प्राणायाम करने की विधि इस प्रकार से है -

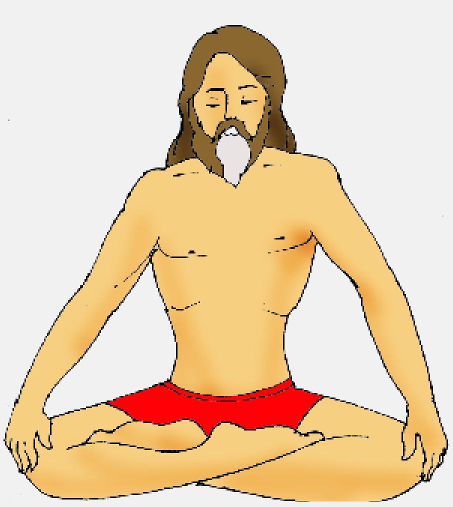

पद्मासन या सुखासन में बैठकर बायें हाथ को बायें घुटने पर रखें और दायें हाथ की अनामिका व मध्यमा अंगुलियों से नाक के बायें वाले छिद्र को बंद करें। उस समय कोहनी को सीधा करें और इतना उठा लें कि कंधे के बराबर हो जाये। फिर नाक के दायें वाले छिद्र से वेग पूर्वक साँस बाहर फेंके और भीतर खींचे। इसमें न साँस को रोकना है, न कुछ विराम लेना है, लगातार कम से कम 8-10 बार साँस खींचें और बाहर फेंकें। इसके बाद साँस भीतर खींचकर भीतर रोकें। सुविधा से जितना रोका जा सके, सांस को अंदर रोकना चाहिए। अब दायें हाथ के अंगूठे से नाक के दायें छिद्र को बंद करके नाक के बायें वाले छिद्र से रोकी हुई सांस बाहर निकाल दें। इसी तरह अनामिका व मध्यमा से नाक के दायें वाले छिद्र से वेग पूर्वक सांस भीतर खींचना व बाहर फेंकना चाहिए। यह भी कम से कम 10 बार होना चाहिए। फिर अंत में साँस को भीतर यथाशक्ति रोकें और दायें हाथ के अँगूठे से नाक के बायें वाले छिद्र को बंद करके नाक के दायें वाले छिद्र से साँस निकाल दें।

यह एक प्राणायाम हुआ। इस प्रकार से कम से कम तीन प्राणायाम नित्य करने चाहिए। बाद में धीरे-धीरे ही इसे बढ़ाना चाहिए और आहार के संबंध में भी विशेष सावधान रहना चाहिए। इस प्राणायाम का लाभ शीघ्र ही परिलक्षित होने लगता है।

क्रमशः

साप्ताहिक राशिफल

20 अक्टूबर से 26 अक्टूबर तक

मेष (चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ)

20, 21, 22 को ग्रह-गोचर शुभ व अनुकूल होगा। राजनैतिक क्षेत्र में रूतबा बढ़ेगा। लोग आपका मान-सम्मान करेंगे। 23, 24 को सितारों की चाल प्रतिकूल होगी। कार्य-क्षेत्र में बाधा महसूस करेंगे। नई मशीनरी आदि की खरीदारी में हानि होना संभव होगा। 25, 26 को समय व परिस्थिति में सुधार होगा। दाम्पत्य जीवन में सुख व सहयोग बना रहेगा।

वृष (ई, ऊ, ए, ओ, वा, वी, वु, वे, वो)

20, 21, 22 को समय मध्यम है। व्यय पर नियंत्रण रखें। कार्य क्षेत्र आदि के प्रति सतर्क रहें। विशेष कार्य के लिए जल्दबाजी न करें। 23, 24 को ग्रह-गोचर की स्थिति शुभ व अनुकूल होगी। नवीन व्यावसायिक योजना सफल होगी। 25, 26 को सितारों की चाल प्रतिकूल होगी। परिवार में कलह व मानसिक तनाव होगा।

मिथुन (का, कि, कू, घ, ङ, छ, के, को, ह)

20, 21, 22 को ग्रह-गोचर अनुकूल फलों को देने में समर्थ होगा।। भाग्य वृद्धि व शुभ समाचार प्राप्त होगा। 23, 24 को समय मध्यम होगा। पारिवारिक कार्यों को पूरा करने का अवसर प्राप्त होगा। पठन-पाठन में रुचि बढ़ेगी। 25, 26 को ग्रह-गोचर की स्थिति शुभ व अनुकूल होगी। साहस व पराक्रम तेज होगा।

कर्क (ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो)

20, 21, 22 को सितारों की चाल प्रतिकूल होगी। शत्रु व प्रतिद्वन्द्वी हानि का प्रयास करेंगे शुभ कार्यों की योजना को स्थगित करें।23, 24 को ग्रह-गोचर की स्थिति पुनः अनुकूल होगी। रुके हुए अधूरे कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा। 25, 26 को समय मध्यम होगा। विद्या अध्ययन आदि का अवसर होगा।

सिंह (मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे)

20, 21, 22 को ग्रह-गोचर की स्थिति अनुकूल होगी। व्यावसायिक उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। 23, 24 को सितारों की चाल प्रतिकूल होगी। लाभ-मार्ग में रुकावट उत्पन्न होगा। धन हानि। वरिष्ठ अफसरजनों से विवाद होना संभव होगा। 25, 26 को ग्रह-गोचर की स्थिति अनुकूल होगी। बाधा व परेशानी से राहत महसूस करेंगे। स्वास्थ्य में सुधार होगा।

कन्या (टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो)

20, 21, 22 को ग्रह-गोचर की स्थिति शुभ होगी। व्यावसायिक उन्नति व धन वृद्धि के चांस बढ़ेंगे। मान-सम्मान बढ़ेगा। 23, 24 को ग्रह-गोचर की स्थिति पुनः आपके अनुकूल होगी। 25, 26 को सितारों की चाल प्रतिकूल होगी। अपनों का सहयोग प्राप्त करने में समर्थ होंगे।

तुला (रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तु, ते)

20, 21, 22 को शनैः-शनैः परिस्थिति में सुधार होगा। आय और व्यय समान होंगे। अधिकारी वर्ग से न बिगाड़े सहयोग मिलना संभव होगा। 23, 24 को ग्रह-गोचर की स्थिति शुभ व अनुकूल होगी। व्यावसायिक उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। 25, 26 को समय शुभ व उत्तम है। उचित अवसर का लाभ उठायेंगे। भाग्य साथ देगा।

वृश्चिक (तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू)

20, 21, 22, को ग्रह-गोचर की स्थिति आपके प्रतिकूल होगी। मानसिक उलझने व परेशानी महसूस करेंगे। 23, 24 को शनैः-शनैः परिस्थिति में सुधार होगा। उलझन व परेशानियों से राहत महसूस करेंगे। 25, 26 को ग्रह-गोचर की स्थिति शुभ व अनुकूल होगी। सरकारी व राजनैतिक संस्थानों में विशेष उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे।

धनु (ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढा, भे)

20, 21, 22 को समय शुभ है, मनोकामना पूर्ण होगा। अपने प्रियजनों का सहयोग प्राप्त होगा। 23, 24 को सितारों की चाल प्रतिकूल होगी। विरोधी व्यवसाय आदि में रोड़े अटकाने का प्रयास करेंगे। धन की कमी महसूस करेंगे। 25, 26 को शनैः-शनैः परिस्थिति में सुधार होगा। समस्या आदि से राहत मिलेगी।

मकर (भो, जा, जी, जो, खी, खू, खे, खो, गा, गी)

20, 21, 22 को समय शुभ है। हर बिगड़ा हुआ कार्य बनेगा। साहस व उत्साह बढ़ेगा। शत्रु परास्त होंगे। स्वजनों का सहयोग प्राप्त होगा।23, 24 को समय शुभ होगा। प्रेम-प्रसंगों में सुधार होगा। आमोद-प्रमोद व घूमने-फिरने के अवसर प्राप्त होंगे। 25, 26 को ग्रह-गोचर अशुभ होगा। सामाजिक क्षेत्र में परेशानी संभव है।

कुम्भ (गु, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा)

20, 21, 22 को समय मध्यम होगा। संतान के स्वास्थ्य की चिन्ता होगी। कार्य आदि में रुचि कम होगी। 23, 24 को ग्रह-गोचर की स्थिति शुभ होगी। घर में शुभ व मांगलिक कार्य सम्पन्न होगा। हर्षोल्लास का वातावरण होगा। 25, 26 को समय शुभ व अनुकूल होगा। विवाह सगाई के योग बनेंगे। रोमांस व आमोद-प्रमोद में समय व्यतीत होगा।

मीन (दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची)

20, 21, 22 को ग्रह-गोचर की स्थिति अशुभ फलप्रद होगी। महत्वपूर्ण कार्यों में संयम रखना आवश्यक होगा। बंटवारे आदि को लेकर विवाद। 23, 24 को समय मध्यम होगा। परिस्थिति में कुछ सुधार होना संभव होगा। 25, 26 को ग्रह-गोचर की स्थिति शुभ होगी। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

पुत्र, समृद्धि व सुयश देने वाला व्रत

स्कंद षष्ठी

स्कंद षष्ठी व्रत से भगवान शिव के बड़े पुत्र कुमार कार्तिकेय को बड़ी आसानी से प्रसन्न किया जा सकता है। स्कंद षष्ठी व्रत प्रत्येक मास की षष्ठी तिथि को किया जाता है। उस व्रत से पुत्र, समृद्धि व सुयश संबंधी मनोरथों की पूर्ति होती है। उस पर्व पर कुमार स्कंद की प्रतिमा का श्रद्धा सहित पूजन किया जाता है। नारद पुराण में चैत्र से लेकर फाल्गुन मास पर्यंत सभी षष्ठी तिथियों के व्रतों की संक्षिप्त विधि का उल्लेख किया गया हैं। इस साल कार्तिक महीने का स्कंद षष्ठी व्रत 18 अक्टूबर को हैं। इस अवसर पर प्रस्तुत है स्कंद पुराण से उद्धृत एक पावन प्रसंग जिसमें कार्तिकेय द्वारा शिवलिंग स्थापना व स्तोत्र का उल्लेख हैं जिसका पाठ करने से सभी मनोरथों की सिद्धि हो जाती है।

एक बार अर्जुन के पूछने पर नारदजी बोले- अर्जुन! भगवान् कार्तिकेयजी ने तारकासुर का वध करके स्वयं ही इस कुकरेश्वर नामक शिवलिङ्ग को स्थापित किया था। मैं देवताओं के सेनानायक और सबका शासन करने में समर्थ कुमार कार्तिकेय को प्रणाम करके उनके महान् चरित्र का वर्णन करता हूं। तुम एकाग्रचित्त होकर सुनो।

अर्जुन! तारकासुर को मारने के कारण परम बुद्धिमान् कार्तिकेय जी मन-ही-मन अत्यन्त उदास हो शोक करने लगे। उन्होंने स्तुति करनेवाले देवताओं को रोककर कहा-देवगण! मुझ पातकी का, जो सर्वथा शोचनीय है, गुण -गान कैसे करते हो? यद्यपि पापचारी का वध करने में कोई दोष नहीं है, तथापि यह तारकासुर तो भगवान् शङ्कर का भक्त था, यह स्मरण करके मुझे बड़ा शोक हो रहा है। इसलिये मैं कोई प्रायश्चित्त सुनना चाहता हूँ, क्योंकि प्रायश्चित करने से बहुत बड़ा पाप भी नष्ट हो जाता है।

भगवान् शङ्कर के बुद्धिमान् पुत्र कार्तिकेय जी जब इस प्रकार शोक कर रहे थे, उस समय भगवान् विष्णु देवताओं के बीच यों बोले - महेशनन्दन ! यदि श्रुति, स्मृति, इतिहास और पुराण को प्रमाण माना जाय तो दुष्टों के वध में कोई दोष नहीं है। जो निर्दय मनुष्य दूसरों के प्राणों से अपने प्राणों का पोषण करता है, उसका वध कर डालना ही उसके लिये कल्याणकारी है, क्योंकि अपने दोषपूर्ण आचरण से वह मनुष्य नरक को ही जाता है। रक्षा के कार्य में लगे हुए समर्थ पुरुषों द्वारा यदि पापाचारियों का वध न किया जाय, तो ये असमर्थ मनुष्य किसकी शरण में जायँगे, तथा सम्पूर्ण विश्व को धारण करनेवाले धर्मस्वरूप वेद और यज्ञ कैसे होंगे? इसलिये तुमने तारकासुर का वध करके पुण्य ही प्राप्त किया है। तुम्हें पाप तो किसी प्रकार भी नहीं लगेगा। इतने पर भी भगवान् शङ्कर के भक्तों के प्रति यदि तुम्हारा बहुत अधिक आदर है, तो उसके लिये मैं बहुत उत्तम उपाय बतलाऊँगा, जिससे जन्मभर के पापों से छुटकारा मिल जाता है तथा एक कल्पतक रुद्रलोक में दिव्य शरीर धारण करके वह मनुष्य परमानन्द का उपभोग

शेष पेज 15 पर

अहोई अष्टमी

संतान के दीर्घ जीवन व सुख-समृद्धि का व्रत है

व्रत विधि व कथा -

कार्तिक महीने में कृष्ण पक्ष की अष्टमी के दिन कर्काष्टमी व अहोई नामक व्रत किया जाता है। नारद पुराण के अनुसार सर्वगुण सम्पन्न पुत्र की प्राप्ति हेतु और पुत्रों के अच्छे स्वास्थ्य, आयु वृद्धि व सुख-ऐश्वर्य की उपलब्धि में उमा महेश्वर का आशीर्वाद पाने के लिए यह व्रत किया जाता है। श्रद्धालुजन इस व्रत का लाभ सनातन काल से उठाते आ रहे हैं। यह व्रत करने वाले स्त्री-पुरुष व्रत के दिन निराहार रहते हुए अत्यंत श्रद्धा-भाव से शिव-पार्वती की पूजा करते हैं और अपनी संतान की सुख-शांति व आयु-वृद्धि हेतु भगवान से अनुग्रह करने की प्रार्थना करते हैं। दिन भर निराहार रहने के बाद व्रती स्त्री-पुरुष चंद्रोदय होने पर उन्हें अर्घ्य समर्पित कर अपने पुत्रों के सभी मनोरथों को भी पूरा करने के लिए भोले शंकर व जगदंबा का आशीर्वाद मांगते हैं।

अधिकतर यह व्रत अहोई अष्टमी के नाम से प्रसिद्ध है। माताएं अपने पुत्रों की उन्नति, समृद्धि व आयु वृद्धि के लिए यह व्रत आजीवन करती रहती हैं। कार्तिक कृष्ण पक्ष की अष्टमी को ही यह व्रत मनाया जाता है। इस दिन पुत्रों की माताएं पूरे दिन व्रत करती हैं।

इस दिन सायंकाल तारे निकलने के पश्चात दीवार पर अहोई बनाकर उसकी पूजा करें। व्रत रखने वाली मातायें कहानी सुनें। कहानी सुनते समय एक पत्ते पर जल से भरा लोटा रखें।

एक चांदी की अहोई बनवायें और दो चांदी के मोती एक डोरे में डलवायें जिस तरह हार में पेंडिल लगा होता है। उसकी जगह चांदी की अहोई लगवायें और डोरे में चांदी के मोती डलवा दें। फिर अहोई की रोली, चावल, दूध-भात से पूजा करें। जल के लोटे पर एक सतिया काढ़कर एक कटोरे में सीरी और रुपये का बायना निकालकर और हाथ में सात दाने गेहूं के लेकर कहानी सुनें। फिर अहोई को गले में पहन लें। जो बायना निकाला था, उसे सासूजी के पांव छूकर दें।

अष्टमी के पश्चात किसी अच्छे दिन अहोई गले में से उतार कर, जितने बेटे होवें उतनी बार और जितने बेटों का विवाह हुआ हो, उतनी बार दो चांदी के दाने डालती जायें। जब अहोई उतारें, उसको गुड़ से भोग लगाकर तथा जल के छीटें देकर रख दें। चन्द्रमा का अर्घ्य देकर भोजन करें।

इस दिन ब्राह्मणों को दान में पेठा अवश्य देना चाहिए। यह व्रत छोटे बच्चों के कल्याण के लिए किया जाता है। अहोई देवी के चित्र के साथ-साथ बच्चे के चित्र भी बनवायें एवं उनकी पूजा करें।

अहोई व्रत कथा - प्राचीन काल की बात है। भारतवर्ष के दतिया नामक नगर में चन्द्रभान नाम का साहूकार रहता था। उसकी पत्नी चन्द्रिका गुणवान व पतिव्रता थी। उसके कोई भी संतान जीवित नहीं रहती थी। दोनों दुःखी होकर सोचा करते थे कि हमारी मृत्यु के पश्चात इस वैभव का कौन स्वामी होगा?

एक दिन वे निश्चय करके घर-बार छोड़कर जंगल में निवास करने चले गये। जब दोनों चलते-चलते थक जाते तब बैठ जाते और फिर चलने लगते। इसी तरह वे बद्रिकाश्रम के निकट एक शीतलकुंड के पास पहुंचे।

शेष पेज 15 पर

पापशाप हारिणी कार्तिक मास की 'रमा' एकादशी

प्रत्येक मास के कृष्ण व शुक्ल पक्ष की एकादशियों को शास्त्रों में विविध नामों से पुकारते हुए उनकी विशिष्टताओं पर भी विशेष प्रकाश डाला गया है। पद्म पुराण में कार्तिक कृष्ण पक्ष की एकादशी का नाम रमा बदलाते हुए उसे पापशाप हारिणी भी बतलाया गया है।

चाहे किसी भी मास की एकादशी हो, सभी महान पुण्य फल देने वाली होती हैं। यही वजह है कि हमेशा तपश्चर्या व आध्यात्मिक साधना में लगे रहने वाले लोगों के लिए भी एकादशी का व्रत लाभप्रद बताया गया है। सामान्य गृहस्थों के लिए तो एकादशी व्रत बहुत ही आवश्यक है। एकादशी व्रत से न केवल वर्तमान के पापों का प्रक्षालन होता है बल्कि पूर्वकृत पापों व शापों के शमन के लिए भी इसे उपयोगी बताया गया है। प्रत्येक मास के कृष्ण व शुक्ल पक्ष की एकादशियों को शास्त्रों में विविध नामों से पुकारते हुए उनकी विशिष्टताओं पर भी विशेष प्रकाश डाला गया है। पद्म पुराण में कार्तिक कृष्ण पक्ष की एकादशी का नाम रमा बदलाते हुए उसे पापशाप हारिणी भी बतलाया गया है। वह पावन प्रसंग यहां प्रस्तुत किया जा रहा है।

एक बार भगवान् श्रीकृष्ण से युधिष्ठिर ने पूछा - जनार्दन! मुझ पर आपका स्नेह है, अतः कृपा करके बताइये कि कार्तिक के कृष्ण पक्ष में कौन-सी एकादशी होती है?

भगवान् श्रीकृष्ण बोले - राजन्! कार्तिक के कृष्णपक्ष में जो परम कल्याणमयी एकादशी होती है, वह 'रमा' के नाम से विख्यात है। 'रमा' परम उत्तम है और बड़े-बड़े पापों को हरने वाली है।

पूर्वकाल में मुचुकुन्द नाम से विख्यात एक राजा हो चुके हैं, जो भगवान् श्रीविष्णु के भक्त और सत्यप्रतिज्ञ थे। निष्कण्टक राज्य का शासन करते हुए उस राजा के यहां नदियों में श्रेष्ठ चन्द्रभागा कन्या के रूप में उत्पन्न हुई। राजा ने चन्द्रसेनकुमार शोभन के साथ उसका विवाह कर दिया। एक समय की बात है, शोभन अपने ससुर के घर आये। उनके यहां दशमी का दिन आने पर समूचे नगर में ढिंढोरा पिटवाया जाता था कि एकादशी के दिन कोई भी भोजन न करे। यह डंके की घोषणा सुनकर शोभन ने अपनी प्यारी पत्नी चन्द्रभागा से कहा - 'प्रिये! अब मुझे इस समय क्या करना चाहिए, इसकी शिक्षा दो।'

चन्द्रभागा बोली - प्रभो! मेरे पिता के घर पर तो एकादशी को कोई भी भोजन नहीं कर सकता। हाथी, घोड़े, हाथियों के बच्चे तथा अन्यान्य पशु भी अन्न, घास तथा जल तक का आहार नहीं करने पाते, फिर मनुष्य एकादशी के दिन कैसे भोजन कर सकते हैं। प्राणनाथ! यदि आप भोजन करेंगे तो आपकी बड़ी निन्दा होगी। इस प्रकार मन में विचार करके अपने चित्त

शेष पेज 14 पर

गोवत्स द्वादशी का व्रत

इस दिन गायों और बछड़ों की पूजा की जाती है। व्रत रखने वाला इस दिन प्रातः स्नान कर गाय और बछड़ों का पूजन करे। फिर उनको आटे का गोला बनाकर खिलाये। इस दिन गाय का दूध, गहूं की बनी वस्तुएं और भैंस, बकरी का दूध और कटे फल नहीं खाये।

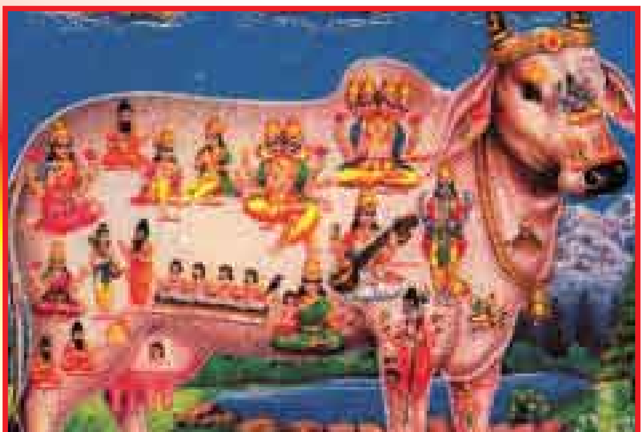

यह त्योहार कार्तिक कृष्ण पक्ष की द्वादशी को मनाया जाता है। इस दिन गायों और बछड़ों की पूजा की जाती है। व्रत रखने वाला इस दिन प्रातः स्नान कर गाय और बछड़ों का पूजन करे। फिर उनको आटे का गोला बनाकर खिलाये। इस दिन गाय का दूध, गेहूं की बनी वस्तुएं और भैंस, बकरी का दूध और कटे फल नहीं खाये। इसके बाद गोवत्स द्वादशी की कहानी को सुने। फिर ब्राह्मणों का फल दान करे और उनका आशीर्वाद प्राप्त करे। इस वर्ष यह व्रत 3 नवंबर को है।

गोवत्स द्वादशी की कथा-बहुत समय पूर्व की बात है, भारतवर्ष में स्वर्णपुष्प नाम का एक बहुत रमणीक नगर था। वहां देवरावी नाम का राजा राज्य करता था। राजा बहुत धर्मात्मा, दानी और गौ माता का सेवक था। उसके यहां एक गाय, बछड़ा और भैंसें रहती थीं। उस राजा के दो रानियां थीं। एक का नाम सीता और एक का नाम गीता था। सीता भैंस से प्यार करती थी और उसे अपनी सखी की तरह मानती थी, जबकि गीता गाय और बछड़े से प्रेम करती थी।

एक दिन भैंस सीता से बोली-हे रानी! गाय का बछड़ा होने से मुझे द्वेष है। सीता ने कहा- अगर ऐसी बात है तो मैं सब काम ठीक कर लूंगी। सीता ने उसी दिन गाय के बछड़े को उठाकर गेहूं के ढेर में दबा दिया-इस बात का किसी को पता न चला। जब राजा खाना खाने गया तो उसके महल में मांस की वर्षा होने लगी। चारों ओर महल में मांस और रक्त दिखाई देने लगा। जो खाना रखा था वह पखाना बन गया। यह देख राजा बहुत चिन्ता में पड़ गया कि यह सब क्या है? उसी समय आकाशवाणी हुई कि राजन्! तेरी स्त्री सीता ने गाय के बछड़े को गेहूं की ढेरी में दबा दिया है। इसी कारण यह सब हुआ है। इतना सुनकर राजा गुस्से से कांपने लगा। तभी दुबारा स्वर गूंजा कि हे राजन्! कल गोवत्स द्वादशी है। अतः भैंस को शहर से बाहर निकालकर तुम व्रत रखकर गाय के बछड़े को मन में विचारकर उनकी पूजा करना। गाय, भैंस का दूध और फल नहीं खाना। साथ ही गेहूं की कोई वस्तु भी न खाना। तब तेरा सब पाप दूर हो जायेगा और बछड़ा भी जीवित हो जायेगा।

जब गाय शाम को आयी तो वह भी बछड़े के बिना बेचैन हुई। दूसरे दिन राजा ने आकाशवाणी के अनुसार ही कार्य किया। पूजा करते समय जैसे ही बछड़े को मन में याद किया वैसे ही बछड़ा गेहूं के ढेर से निकल आया। यह देखकर राजा बहुत प्रसन्न हुआ और गोवत्स द्वादशी का व्रत करने की पूरे राज्य में घोषणा करवा दी।

दिल और गुर्दे की बीमारियों से बचाता है सेब

सेब दुनिया भर में व्यापक रूप से उगाया जाने वाला फल है। रोसासी परिवार के इस सदस्य को वैज्ञानिक भाषा में मालुस पूमिला लिनिअस कहते हैं। इसके पेड़ की ऊंचाई लगभग 15 मीटर होती है। कच्ची अवस्था में सेब हरे तथा स्वाद में खट्टे होते हैं पकने पर लाल-हरित आभा के लिए मीठे और रसदार हो जाते हैं।

आयुर्वेद के अनुसार, सेब पित्तनाशक, वातनाशक, शीतल, भारी, पुष्टिकारक हृदय के लिए फायदेमंद, वीर्यवर्धक तथा मसाने एवं गुर्दों को साफ करने वाला है। इससे अनेक आयुर्वेदिक दवाइयां बनती हैं। इसमें सर्वाधिक मात्रा में फास्फोरस होता है। इसके अतिरिक्त इसमें आयरन, प्रोटीन, कैल्शियम, शर्करा तथा बी समूह के विटामिन भी पर्याप्त मात्रा में होते हैं। कार्बोहाइट्रेट का एक रूप पेक्टीन भी इसमें खूब पाया जाता है। यह हृदय रोग में बहुत लाभकारी होता है।

पथरी रोगी के लिए सेब बहुत फायदेमंद होता है। रोगी को पूर्णतया पके हुए चार-पांच सेब प्रतिदिन खाने को देने चाहिएं। भोजन में शाक-सब्जी व फल देने चाहिएं। जिगर के रोगी के लिए तो सेब अमृत के समान है। उन्हें दिन में हर बार भोजन से पहले दो ताजा-मीठे सेब खाने चाहिएं या सेब की चाय पीनी चाहिए।

मस्तिष्क की कमजोरी दूर करने के लिए सेब एक अचूक इलाज है। ऐसे रोगी को प्रतिदिन एक सेब खाने को दें। इसके अतिरिक्त रोगी को दोपहर तथा रात को भोजन में कच्चे सेबों की सब्जी दें। शाम को एक गिलास सेब कर रस दें तथा रात को सोने से पूर्व एक पका मीठा सेब खिलाएं। इससे एक महीने में ही रोगी की दशा में

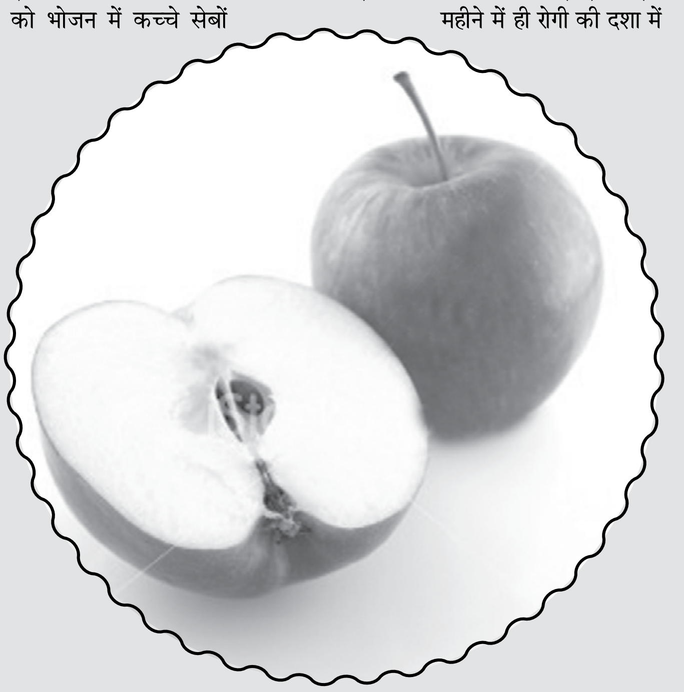

सुधार आने लगता है।

जिन लोगों की आंखें कमजोर हैं तो उन्हें एक ताजा सेब की पुल्टिस कुछ दिनों तक आंखों पर बांधनी चाहिए। यदि भोजन के साथ प्रतिदिन ताजा मक्खन तथा मीठा सेवा खाएं तो नेत्र ज्योति तो तेज होती ही है साथ ही दस्त व पेशाब खुलकर आता है तथा चेहरा सुर्ख हो जाता है।

बुखार में रोगी को प्यास, जलन, थकान तथा बेचैनी हो तो सेब की चाय या ताजा सेब का रस पिलाना चाहिए। इससे रोगी को तुंत आराम मिलता है। गले में घाव, छाले हों या किसी भी चीज को निगलने में कष्ट होता हो तो अच्छे ताजे सेब का रस निकाले फिर चम्मच से धीरे-धीरे रस गले तक ले जाएं और कुछ समय के लिए गले में रोककर रखें। इससे आश्चर्यजनक लाभ होता है।

पेट में गैस की शिकायत रहती हो तो एक मीठे सेब में लगभग 10 ग्राम लौंग चुभाकर रख दें। दस दिन बाद लौंग निकालकर तीन लौंग तथा एक मीठा सेब नियमित रूप से खाएं। इस दौरान चावल या उससे बनी चीजें रोगी को खाने को न दें।

पेट के कीड़ों के निदान के लिए रोगी को प्रतिदिन दो मीठे सेब दें या प्रतिदिन एक गिलास ताजा सेब का रस दें। इससे कीड़े मर जाते हैं और मल के रास्ते निकल जाते हैं। कब्ज दूर करने के लिए प्रतिदिन सुबह उठकर खाली पेट दो सेब चबाचबाकर खाएं। इससे अग्निमांद्य दूर होता है और भूख भी बढ़ जाती है।

दिल कमजोर हो या दिल की धड़कन कम या ज्यादा हो तो चांदी का वर्क लगाकर सेब के मुरब्बे का सेवन करना चाहिए। इससे मोटापा भी दूर होता है। अनिद्रा के उपचार में भी सेब बहुत उपयोगी है। नींद न आती हो या एक-दो बजे नींद खुलने पर दुबारा नींद न आती हो तो रोगी को सेने से पहले एक मीठे सेब की मुरब्बा खिलाइये तथा ऊपर से गुनगुना दूध पीने को दें। इससे अच्छी नींद आएगी। सेब की जड़ की छाल, प्रशीतक तथा आंत्र-कृमिहर है। छाल का फांट बारी के पैतिक बुखारों में लाभकारी होती है।

बिच्छू का विष उतारने के लिए सेब के ताजा रस में आधा ग्राम कपूर मिलाकर आधे-आधे घंटे बाद पिलाना चाहिए। पके सेब के एक गिलास रस में मिश्री मिलाकर प्रतिदिन सुबह नियमित रूप से पीने से पुरानी से पुरानी खांसी भी ठीक हो जाती है। जिन्हें सिरदर्द चिड़चिड़ापन, बेहोशी, उन्माद या भूलने की शिकायत हो उन्हें भोजन से पहले दो ताजा मीठे सेबों को सेवन करना चाहिए। ऐसे रोगी को साधारण चाय-कॉफी छोड़कर केवल सेब की चाय ही पीनी चाहिए।

पेज 9 का शेष

व्यग्रता की व्यथा ...

विरल माध्यम में गुजरने के दौरान धूप की किरणों का ऐसा विचलन हो जाता है कि दूर देखने पर पेड़ों आदि का उल्टा प्रतिबिंब नजर आने लगता है। यह देखकर ऐसा भ्रम होता है कि जो उल्टे पेड़ नजर आ रहे हैं वे किसी जलाशय में पड़ रहे हैं। वहां जाने पर पीने के लिए जल उपलब्ध हो जाएगा।

रेगिस्तान में उस स्थिति में मृग क्या मनुष्यों को भी भ्रम हो जाता है कि उस स्थान पर कोई जलाशय है। इस प्रकार प्यास से बेचैन मृग उस काल्पनिक जलाशय तक पहुंचने के लिए दौड़ना शुरू कर देते हैं। किंतु जैसे-जैसे उस स्थान की तरफ आगे बढ़ते हैं वैसे उल्टे पेड़ों का प्रतिबिंब भी दूर होता जाता है। क्योंकि जलाशय तो दृष्टि भ्रम की वजह से नजर आता है। प्रकाश की किरणों के आवर्तन-परावर्तन से उल्टे पेड़ के प्रतिबिंब जलाशय का भ्रम पैदा करते हैं। उस भ्रम की वजह से दौड़ते-दौड़ते मृगों के प्राण पखेरू उड़ जाते हैं, लेकिन उन्हें पानी उपलब्ध नहीं हो पाता।

उसी प्रकार हमारा मन तरह-तरह की विषय-वासनाओं में मिलने वाले क्षणिक सुख को शाश्वत सुख समझ लेने का भ्रम पैदा हो जाता है। इसलिए अधिकतर मनुष्य उसी भ्रम-ज्ञान को वास्तविक ज्ञान मान लेते हैं और रेगिस्तान के प्यासे मृगों की तरह दौड़ते-दौड़ते ही अपना दम तोड़ देते हैं। इस प्रकार सुर दुर्लभ मानव तन पाने के सुअवसर को बर्बाद कर देते हैं। इसलिए हमारे प्राचीन मनीषियों ने मन को विषयों के पीछे दौड़ाने से मना किया है। जब हमारा मन भूत-भविष्य की दौड़ छोड़ वर्तमान में ठहर जाने का कोई उपाय पा लेता है तो हमारे मन को निश्चल अवस्था में ठहरने का मौका मिलता है। वह उपाय बाहरी दुनिया की दौड़ छोड़ आभ्यंतरिक साधना करने का है। उसी उपाय से भटकाव की व्यग्रता वाली व्यथा शांत होती है।

पेज 13 का शेष

रमा एकादशी ...

को दृढ़ कीजिए।

शोभन ने कहा - प्रिये ! तुम्हारा कहना सत्य है, मैं भी आज उपवास करूंगा। दैव का जैसा विधान है, वैसा ही होगा।

भगवान् श्रीकृष्ण कहते हैं - इस प्रकार दृढ़ निश्चय करके शोभन ने व्रत के नियम का पालन किया। क्षुधा से उनके शरीर में पीड़ा होने लगी, अतः वे बहुत दुःखी हुए। भूख की चिन्ता में पड़े-पड़े सूर्यास्त हो गया। रात्रि आयी, जो हरिपूजापरायण तथा जागरण में आसक्त वैष्णव मनुष्यों का हर्ष बढ़ाने वाली थी, परंतु वही रात्रि शोभन के लिए अत्यन्त दुखदायिनी हुई। सूर्योदय होते-होते उनका प्राणन्त हो गया। राजा मुचुकुन्द ने राजोचित काष्ठों से शोभन का दाह-संस्कार कराया। चंद्रभागा पतिका पारलौकिक, कर्म करके पिता के ही घर पर रहने लगी। नृपश्रेष्ठ! 'रमा' नामक एकादशी के व्रत के प्रभाव से शोभन मन्दराचल के शिखर पर बसे हुए परम रमणीय देवपुर को प्राप्त हुआ। वहां शोभन द्वितीय कुबेर की भांति शोभा पाने लगा। राजा मुचुकुन्द के नगर में सोमशर्मा नाम से विख्यात एक ब्राह्मण रहते थे, वे तीर्थ यात्रा के प्रसंग से घूमते हुए कभी मन्दराचल पर्वत पर गये। वहां उन्हें शोभन दिखायी दिये। राजा के दामाद को पहचानकर वे उनके समीप गये। शोभन भी उस समय द्विजश्रेष्ठ सोमशर्मा को आया जान शीघ्र ही आसन से उठकर खड़े हो गये और उन्हें प्रणाम किया। फिर क्रमशः अपने श्वशुर राजा मुचुकुन्द का प्रिय पत्नी चन्द्रभागा का तथा समस्त नगर का कुशल-समाचार पूछा।

सोमशर्मा ने कहा - राजन् ! वहां सबकी कुशल है। यहां तो अद्भुत आश्चर्य की बात है! ऐसा सुन्दर और विचित्र नगर तो कहीं किसी ने भी नहीं देखा होगा। बताओ तो सही, तुम्हें इस नगरी की प्राप्ति कैसे हुई?

शोभन बोले - द्विजेन्द्र! कार्तिक के कृष्ण पक्ष में जो रमा नाम की एकादशी होती है, उसी का व्रत करने से मुझे ऐसे नगर की प्राप्ति हुई है। ब्रह्मन्! मैंने श्रद्धाहीन होकर इस उत्तम व्रत का अनुष्ठान किया था, इसलिए मैं ऐसा मानता हूं कि यह नगर सदा स्थिर रहने वाला नहीं है। आप मुचुकुन्द की सुन्दरी कन्या चन्द्रभागा से यह सारा वृतान्त कहियेगा। शोभन की बात सुनकर सोमशर्मा ब्राह्मण मुचुकुन्दपुर में गये और वहां चन्द्रभागा के सामने उन्होंने सारा वृतान्त कह सुनाया।

सोमशर्मा बोले - शुभे! मैंने तुम्हारे पति को प्रत्यक्ष देखा है तथा इन्द्रपुरी के समान उनके दुर्धर्ष नगर का भी अवलोकन किया है। वे उसे अस्थिर बतलाते थे। तुम उसको स्थिर बनाओ।

चन्द्रभागा ने कहा - ब्रह्मर्षे! मेरे मन में पति के दर्शन की लालसा लगी हई है। आप मुझे वहां ले चलिए मैं अपने व्रत के पुण्य से उस नगर को स्थिर बनाऊंगी।

भगवान् श्रीकृष्ण कहते हैं - राजन्! चन्द्रभागा की बात सुनकर सोमशर्मा उसे साथ ले मन्दराचल पर्वत के निकट वामदेव मुनि के आश्रम पर गये। वहां ऋषि के मंत्र की शक्ति तथा एकादशी सेवन के प्रभाव से चन्द्रभागा का शरीर दिव्य हो गया तथा उसने दिव्य गति प्राप्त कर ली। इसके बाद वह पति के समीप गयी। उस समय उसके नेत्र हर्षोल्लास से खिल रहे थे। अपनी प्रिय पत्नी को आयी देख शोभन को बड़ी प्रसन्नता हुई। उन्होंने उसे बुलाकर अपने वामभाग में सिंहासन पर बिठाया, तदनन्त्र चन्द्रभागा ने हर्ष में भरकर अपने प्रियतम से यह प्रिय वचन कहा - नाथ! मैं हित की बात कहती हूं, सुनिये। पिता के घर में रहते समय जब मेरी अवस्था आठ वर्ष से अधिक हो गयी, तभी से लेकर आज तक मैंने जो एकादशी के व्रत किये हैं और उनसे मेरे भीतर जो पुण्य संचित हुआ है, उसके प्रभाव से यह नगर कल्प के अन्त तक स्थिर रहेगा तथा सब प्रकार के मनोवांछित वैभव से समृद्धिशाली होगा।

नृपश्रेष्ठ! इस प्रकार 'रमा' व्रत के प्रभव से चन्द्रभागा दिव्य भोग, दिव्य रूप और दिव्य आभरणों से विभूषित हो अपने पति के साथ मन्दराचल के शिखर पर विहार करती है। राजन्! मैंने तुम्हारे समक्ष रमा नामक एकादशी का वर्णन किया है। यह चिन्तामणि तथा कामधेनु के समान सब मनोरथों को पूर्ण करने वाली है। मैंने दोनों पक्षों के एकादशीव्रतों का पापनाशक माहात्म्य बताया है। जैसी कृष्णपक्ष की एकादशी है, वैसी ही शुक्ल पक्ष की भी है, उनमें भेद नहीं करना चाहिए। जैसे सफेद रंग की गाय हो या काले रंग की, दोनों का दूध एक-सा ही होता है, इसी प्रकार दोनों पक्षों की एकादशियां समान फल देने वाली हैं। जो मनुष्य एकादशी व्रतों का माहात्म्य सुनता है, वह सब पापों से मुक्त हो श्रीविष्णु लोक में प्रतिष्ठित होता है।

पेज 12 का शेष

स्कंद षष्ठी ...

करता है। स्कन्द! पाप करने पर जिसे बहुत अधिक पश्चात्ताप होता है, उसके लिये भगवान् शङ्कर के आराधन से बढ़कर दूसरा कोई उपाय नहीं है। जिनकी महिमा का वर्णन करने में ब्रह्माजी भी समर्थ नहीं हैं तथा जिनके विषय में कुछ कहने में श्रुति भी भयभीत होती है, उन भगवान् महेश्वर से बढ़कर दूसरी कौन वस्तु हो सकती है।

त्रिलोकी में भगवान् शङ्कर के सिवा दूसरा कौन ऐसा देवता है, जिसका पृथ्वी ही रथ है, ब्रह्माजी सारथी हैं, मैं बाण हूँ, मन्दराचल धनुष है तथा चन्द्रमा

और सूर्य रथ के पहिये हैं। कोई-कोई योगमार्ग से भगवान् शङ्कर जी आराधना बताते हैं, परंतु सदा शून्य की उपासना करने वाले उन योगियों का मार्ग सर्वसाधारण के लिये दुःसाध्य है। इसलिये जो भोग और मुक्ति दोनों चाहता है, उसे उनके लिङ्गमय स्वरूप की ही आराधना करनी चाहिये। सृष्टि के आदि में मेरे और ब्रह्माजी के विवाद में भगवान् शिव लिङ्गरूप में प्रकट हुए थे। उस लिङ्गमय स्वरूप में सम्पूर्ण चराचर जगत् लीन होता है, इसीलिये वेद में उसे लिङ्ग कहा गया है। जो परम बुद्धिमान् भगवान् शङ्कर के स्वरूप भूत लिङ्ग को श्रद्धा और पवित्र भाव से जल के द्वारा स्नान कराता है, उसने मानो ब्रह्माजी से लेकर तृणपर्यन्त इस सम्पूर्ण जगत्को तृप्त कर दिया। मिट्टी का, काठ का, ईंट का अथवा पत्थर का मन्दिर बनाकर जो भगवान् शिव को अर्पित करता है, उसे क्रमशः सौगुना पुण्यफल प्राप्त होता है। इसलिये महासेन!

तुम्हें यहाँ शिवलिङ्ग की स्थापना करनी चाहिये।

भगवान् विष्णु के ऐसा कहने पर सब देवता बहुत अच्छा कहने लगे। तत्पश्चात् महादेवजी ने कार्तिकेय को छाती से लगाकर कहा - वत्स! तुम मेरे भक्तों पर जो इतनी कृपा रखते हो, इससे तुम्हारे ऊपर मेरा प्रेम बहुत बढ़ गया है। जगद्गुरु भगवान् वासुदेव ने जो कुछ कहा है, वह सब यथार्थ है। जो मैं हूँ, वही भगवान् विष्णु को जानना चाहिये तथा जो भगवान् विष्णु हैं, वही मैं हूँ। जैसे दो दीपकों में प्रकाश की दृष्टि से कोई अन्तर नहीं होता, उसी प्रकार हम दोनों में भी किञ्चिनमात्र अन्तर नहीं है। स्कन्द! जो भगवान् विष्णु से द्वेष करता है वह मेरा भी अनुगामी नहीं है। जो ऐसा जानता है, वही मेरा वास्तविक भक्त है।

कुमार बोले - पिता जी! आपका कहना सत्य है, मैं आपको और भगवान् विष्णु को एक ही समझता हूँ। भक्तवत्सल विष्णु ने जो मुझे शिवलिङ्ग स्थापित करने की सलाह दी है, वही बात तारकासुर के वध के समय पहले आकाशवाणी ने भी मुझ से कही थी। अतः मैं सब पापों का नाश करनेवाले शिवलिङ्ग की स्थापना करूँगा। वह शिवलिङ्ग मेरे पापों को शान्त करनेवाला हो।

यों कहकर अग्निनन्दन स्कन्द ने विश्वकर्मा को बुलाया और उन्हें आदेश दिया कि तुम शीघ्र ही तीन विशुद्ध शिवलिङ्ग तैयार करो। कार्तिकेय की आज्ञा के अनुसार विश्वकर्मा ने तीन विशुद्ध शिवलिङ्ग तैयार किये और उन्हें उनको समर्पित कर दिया। तदनन्तर भगवान् विष्णु, शिव तथा ब्रह्मा आदि देवताओं के साथ स्कन्द ने पहले पश्चिम दिशा में थोड़ी ही दूरी पर प्रतिज्ञेश्वर नामक परम सुन्दर शिवलिङ्ग की स्थापना की। तब भगवान् महेश्वर ने कुमार की प्रसन्नता के लिये वहाँ स्वयं ही यह वरदान दिया। जो इस स्थान पर कार्तिक और चैत्र मास में अष्टमी को स्नान, उपवास, पूजा और जागरण करके निवास करेगा, वह मृत्यु को भी लाँघ जायगा।

इसके बाद वहाँ से अग्निकोण में जहाँ दैत्य के कपाल से शक्ति निकली थी, वहाँ कार्तिकेय ने द्वितीय शिवलिङ्ग को स्थापित किया। सब पापों का नाश करनेवाला वह कल्याण कारी शिवलिङ्ग कपालेश्वर के नाम से प्रसिद्ध हुआ। कपालेश्वर के समीप ही उस शक्ति का भी स्तवन करके कुमार ने उसकी स्थापना की। जो कापालिकेश्वरी देवी के नाम से प्रसिद्ध हुई। वहाँ सब पापों का नाश करनेवाली कल्याणमयी पातालगङ्गा प्रकट हुई हैं। उसमें स्नान करके स्कन्द ने सब देवताओं के साथ कृपापूर्वक तारकासुर को जलाञ्जलि दी। जिसका सङ्कल्प-वाक्य इस प्रकार है- महर्षि कश्यप के कुल में उत्पन्न शिवभक्त तारक को अर्पित किया जानेवाला यह तिलसहित जल अक्षय भाव से प्राप्त हो।

तब भगवान् महेश्वर ने प्रसन्न होकर स्कन्द को सुनाते हुए कहा-जो मनुष्य चैत्र मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी तिथि को यहाँ स्नान और उपवास करके भगवान् कपालेश्वर का पूजन करेगा, वह तेजस्वी महात्माओं के वधजनित पातक से मुक्त हो जायगा। इसी तिथि को यदि सोमवार हो, शिवयोग हो और तैतिलकरण हो तो इन छहों योगों के एकत्र होने पर जो पुरुष शक्तिछिद्रा नामक तीर्थ में स्नान करके रात में रुद्रिय का जप करेगा, वह शरीर सहित रुद्रलोक में चला जायगा। भगवान् शङ्कर का यह वचन सुनकर स्कन्द बहुत प्रसन्न हुए तथा सब देवता आनन्दमग्न हो साधु-साधु कहने लगे।

तदनन्तर तीसरे लिङ्ग की स्थापना करने की इच्छावाले कार्तिकेय से ब्रह्माजी ने उनकी प्रसन्नता के लिये कहा - कुमार! मैं स्वयं एक दूसरे लिङ्ग का निर्माण करता हूँ। यों कहकर ब्रह्माजी ने स्वयं सब दोषों से रहित मनोहर शिवलिङ्ग का निर्माण किया। इसी प्रकार सब देवताओं ने भी स्कन्द को प्रसन्न करने के लिये वहाँ एक सुन्दर सरोवर तैयार किया और उसमें गङ्गा आदि समस्त तीर्थों की स्थापना करके उनसे कहा-जबतक यह सरोवर यहाँ रहे तबतक तुम सब तीर्थ इसमें निवास करो। तब स्कन्द की प्रसन्नता के लिये इन सब तीर्थों ने एवमस्तु कहकर देवताओं की आज्ञा स्वीकार की। तत्पश्चात् स्कन्द ने प्रसन्नतापूर्वक उस सुन्दर सरोवर में स्नान किया और सब तीर्थों के जल से भक्तिपूर्वक उस शिवलिङ्ग को स्नान कराकर भाँति-भाँति के पुष्पों से सद्योजातादि पाँच मन्त्रों द्वारा पूजन किया। पूजा के समय साक्षात् भगवान् महेश्वर स्थावर जङ्गम प्राणियों के साथ उस शिवलिङ्ग में स्थित हो स्वयं पूजनसामग्री ग्रहण करते थे।

स्कन्द ने पूजन करते समय भगवान् शङ्कर से पूछा-भगवान्! आपको कौन से उपहार भेंट करने से क्या-क्या फल प्राप्त होता हे? भगवान् महेश्वर बोले-जो मेरे लिङ्ग की स्थापना करता और उसके लिये सुन्दर मन्दिर बनवाता है, वह कल्पभर मेरे लोक में निवास करता है। जो मेरे मन्दिर में झाड़ देता और धूल आदि हटाकर शुद्ध करता है, वह सब रोगों से छूट जाता है। देवमन्दिर को चूने आदि से पुतवाने पर मनुष्य का शरीर दृढ़ होता है। पुष्प, दूध आदि, कुशा, तिल, जल, अक्षत और सरसों से भगवान् शङ्कर के मस्तक पर अर्घ्य देकर मनुष्य दस हजार वर्षों तक स्वर्ग में निवास करता है। दही और दूध से शिवलिङ्ग को स्नान कराने पर मनुष्य का शरीर नीरोग हो जाता है। जल, दही, दूध और घी से स्नान कराने पर क्रमशः दस गुना फल प्राप्त होता है। उपर्युक्त वस्तुओं से मुझे स्नान कराकर भक्तिपूर्वक गोधूम-चूर्ण आदि के द्वारा उबटन लगावे, फिर कपिला गाय के पञ्चगव्य से और गङ्गा के जल से मुझे स्नान करावे और विधिपूर्वक मेरा पूजन करे।

देवताओं के सामने ही भगवान् शङ्कर का यह वचन सुनकर कुमार कार्तिकेय को बड़ा विस्मय हुआ। वे भगवान् गिरिजापति को नमस्कार करके उनकी स्तुति करने लगे - जो सब प्रकार के रोग-शोक से रहित हैं, उन कल्याणस्वरूप भगवान् शिव को नमस्कार है। जो सबके भीतर मन रूप से निवास करते हैं, उन भगवान् शिव को नमस्कार है। सम्पूर्ण देवताओं से पूजित भगवान् शङ्कर को नमस्कार है। भक्तजनोंपर निन्तिर कृपा करनेवाले आप भगवान् महेश्वर को नमस्कार है।

आप सुप्रसिद्ध महौषधरूप हैं, आपको नमस्कार है। समस्त व्याधियों का विनाश करनेवाले आपको नमस्कार है। आप चराचर स्वरूप, सबको विचार देनेवाले, कुमारनाथ के नाम से प्रसिद्ध तथा परम कल्याण स्वरूप हैं, आपको नमस्कार है। प्रभो! आप मेरे स्वामी हैं, सम्पूर्ण भूतों के ईश्वर एवं महेश्वर हैं। आप ही सपस्त भोगों के अधिपति हैं। वाणी, बल और बुद्धि के अधिपति भी आप ही हैं। आप ही क्रोध और मोह पर शासन करनेवाले हैं। पर और अपर के स्वामी भी आप ही हैं। सबकी हृदयगुहा में निवास करनेवाले परमेश्वर तथा मुक्ति के अधीश्वर भी आप ही हैं, आपको नमस्कार है।

पार्वतीनंदन स्कन्द ने सब को वर देनेवाले शूलपाणि भगवान् उमापति की इस प्रकार स्तुति करके उनके चरणों में मस्तक झुकाया और नमो नमः का उच्चारण किया।

इस प्रकार भक्तिभाव से भरे हुए अपने योग्य स्तवन सुनकर शिवजी बहुत सन्तुष्ट हुए और पुत्र कार्तिकेय का उन्होंने चिरकाल तक अभिनन्दन करके कहा - बेटा! मेरे भक्त के वध करने का जो दुःख तुम्हारे मन में हुआ है, उसका विचार तुम को नहीं करना चाहिये। अपने इस कर्म से तुम मुनियों के लिये भी स्पृहणीय बन गये हो। जो लोग सायंकाल और सबेरे पूर्ण भक्तिपूर्वक तुम्हारे द्वारा की हुई इस स्तुति से मेरा स्तवन करेंगे, उनको जो फल प्राप्त होगा, उसका वर्णन करता हूँ, सुनो-उन्हें कोई रोग नहीं होगा, दरिद्रता भी नहीं होगी तथा प्रियजनों से कभी वियोग भी न होगा। वे इस संसार में दुर्लभ भोगों का उपभोग करके मेरे परम धाम को प्राप्त होंगे। इतना ही नहीं, मैं उन्हें भी परम दुर्लभ वर प्रदान करूँगा। बेटा! मैं तुम्हारी भक्ति से बहुत प्रसन्न हूँ और तुम्हारी प्रसन्नता के लिये सब कुछ करूँगा।

पेज 12 का शेष

अहोई अष्टमी...

वहां पहुंचकर दोनों ने अन्न-जल त्याग दिया। जब उन्हें भूखे-प्यासे सात दिन हो गये तो वहां आकाशवाणी हुई कि तुम लोग अपने प्राण मत त्यागो। यह दुःख तुम्हें पूर्व जन्म के कारण मिला है।

अतएव हे साहूकार! अब तुम अपनी पत्नी से अहोई अष्टमी के दिन जो कार्तिक कृष्ण पक्ष को आती है, व्रत रखवाना। इस व्रत के प्रभाव से अहोई से अपने पुत्रों की दीर्घायु मांगना। व्रत के दिन रात्रि को राधाकुंड में स्नान करवाना। कार्तिक पक्ष की अष्टमी आने पर चन्द्रिका ने बड़ी श्रद्धा से अहोई देवी का व्रत धारण किया एवं रात्रि को साहूकार राधाकुण्ड में स्नान करने गया। साहूकार जब स्नान करके घर वापिस आ रहा था तो मार्ग में अहोई देवी ने उसे दर्शन दिये एवं बोली - साहूकार! मैं तुमसे बहुत प्रसन्न हूं, तुम मुझसे कुछ भी वर मांग लो।

साहूकार अहोई देवी के दर्शन कर, बहुत प्रसन्न हुआ और कहा - मां! मेरे बच्चे कम उम्र में ही देवलोक को चले जाते हैं। इसलिए मां, उनकी दीर्घायु होने का आशीर्वाद दीजिये। अहोई देवी बोलीं - ऐसा ही होगा। इतना कहकर देवी अन्तर्धान हो गयीं।

कुछ दिनों के बाद साहूकार के यहां एक पुत्र पैदा हुआ, जो बड़ा होने पर विद्वान, बलशाली, प्रतापी और आयुष्मान हुआ। अगर किसी स्त्री के पुत्र हुआ हो, या पुत्र का विवाह हुआ तो अहोई व्रत की समाप्ति का उत्सव करे। एक थाली में सात जगह पूड़ी एवं थोड़ा सा सीरा रखे। इसके अतिरिक्त एक साड़ी-ब्लाउज, एक रुपया रखकर थाली में रखे एवं थाली में चारों ओर हाथ फेर कर पूड़ी का बायना वितरण कर दे। अगर लड़की कहीं अन्य जगह हो तो उसके लिये बायना वहीं भेज देना चाहिए।

अहोई का उजमन- यदि किसी स्त्री के बेटा हुआ हो, या बेटे का विवाह हुआ हो तो अहोई का उजमन करे। एक थाली में सात जगह चार-चार पूड़ी और थोड़ा-थोड़ा सीरा रखे। साथ ही एक साड़ी-ब्लाउज रखे। फिर थाली के चारों ओर जल का हाथ फेरकर अपनी सासू मां के पैर छूकर दे दे। साड़ी-ब्लाउज सासू पहन ले और बायना बांट दे। यदि लड़की कहीं दूर हो तो उसके लिए बायना वहीं भेज दे।

हमारे प्रकाशन

श्री शनिचरणानुरागी श्री श्री 1008 महामंडलेश्वर दाती जी महाराज राजस्थानी ने कई महत्वपूर्ण विषयों पर अनेकानेक पुस्तकों की रचना की है। उनके अनेक ग्रंथ तो अब भी अप्रकाशित पड़े हुए हैं। प्रभु की कृपा से हम उनकी निम्नलिखित पुस्तकों को प्रकाशित करने में सफल हुए हैं, जिनकी काफी दिनों से प्रतीक्षा की जा रही थी। आशा है, इन पुस्तकों से पाठकगण विशेष लाभ उठाने में सफल होंगे।

ज्योतिष व वास्तु

पुस्तक का नाम	मूल्य (रु.)
सरल ज्योतिष प्रवेशिका	200
सरल गोचर प्रवेशिका	200
सरल मुहूर्त प्रवेशिका	100
सरल वास्तु प्रवेशिका	150
सरल हस्तरेखा विज्ञान प्रवेशिका	150
ताजिक ज्योतिष	150
सामान्य ज्योतिष एवं खगोल	50
शनि समग्र दर्शन (प्रथम भाग)	200
शनि समग्र दर्शन (द्वितीय भाग)	200
शनि साधना के चमत्कारिक प्रयोग	100
द्वादश भावों में श्री शनिदेव	100
क्या है शनि की साढेसाती और ढैय्या	100
शनि उपासना क्यों और कैसे?	200
शनि चरित्र गाथा व शनितीर्थ महात्म्य	100
शनि शांति के अमोघ देव अनुष्ठान	100
शनिवार व्रत विधि व कथा	25
काल सर्प योग	100

स्वास्थ्य व चिकित्सा

पुस्तक का नाम	मूल्य (रु.)
भोग रोग योग	200
चमत्कार को नमस्कार	100
अद्भुत देसी नुसखे भाग - 1	100
अद्भुत देसी नुसखे भाग - 2	200
अद्भुत देसी नुसखे भाग - 3	200
दाती गुरुमंत्र के उपाय खंड - 1	125
दाती गुरुमंत्र के उपाय खंड - 2	200
दाती गुरुमंत्र के उपाय खंड - 3	200
दाती गुरुमंत्र के उपाय खंड - 4	200
दाती गुरुमंत्र के उपाय खंड - 5	200
ग्रह-नक्षत्र शांति द्वारा रोगोपचार	80
मंत्रों द्वारा रोगोपचार	30
आसनों द्वारा रोगोपचार	30
प्राणायाम द्वारा रोगोपचार	25
रोगोपचार में उपयोगी हस्त मुद्राएं	30
रोगोपचार में उपयोगी रत्न	25
सूर्य रश्मियों के रंगों से रोगोपचार	20
तन-मन के रोगों से मुक्ति की युक्ति	25
आसनःआरोग्यता का अनुपम साधन	225
प्राणायाम	150

अध्यात्म

खुला आमंत्रण परमानन्द के लिए	100
मानुष तन दुर्लभ अति	30
हो कौन? जाओगे कहां? जानोगे कैसे?	100
जीवन शांत मन के साथ	35
तनाव मुक्त जीवन	35
गीता : मोह से मोक्ष तक की गाथा	50
लाली मेरे लाल की	125
समाधान	150
एक शाश्वत खोज	125
मर्म की बातें (I,II,III)	75
कुडलिनी जागरण	200
सफलता के सनातन सूत्र-प्रथम पुष्प	125
कार्य सफलता में बाधक तनाव	125
Living with peace of life	35
Eternal Bliss	150
Shedding of stress	50
Effectuation of Shani Adoration	200
Tiny Tips	125

संपर्क करें - श्री सिद्ध शक्ति पीठ शनिधाम ट्रस्ट, श्री शनि तीर्थ क्षेत्र असोला, फतेहपुर बेरी, महरोली, नई दिल्ली-74 फोन - 26654400, 26653600, फैक्स : 26653500

किसी बाहरी लक्षण से नहीं पहचाना जा सकता समय के महापुरुष को : दाती श्री

समय का महापुरुष होने का दावा करने वाले लोगों की भी कमी नहीं है। ऐसे में सामान्य जन उन्हें कैसे ढूंढ पायेंगे? इस बात में सबसे बड़ी दिक्कत यह है कि समय के महापुरुष की कोई बाहरी पहचान निश्चित नहीं है। इसी वजह से इस संसार के अधिकांश लोग सत्यमार्ग से अपरिचित रह जाते हैं और तथाकथित महापुरुषों के मनोकल्पित साधनाओं में उलझकर सही मार्ग से दूर हट जाते हैं। इस प्रकार इच्छा होने के बावजूद लोग मानव तन के परम लक्ष्य तक पहुंचने की सच्ची युक्ति का ज्ञान पाने से वंचित रह जाते हैं।

सच कहिये तो समय के महापुरुष को पहचानने के लिए भी हृदय के अंदर उस विशिष्ट प्यास का होना आवश्यक है, उस महान रिक्ति का पूरी समग्रता से अनावृत होना आवश्यक है जिसमें समय के महापुरुष अपनी पूरी पूर्णता व समग्रता के साथ सच्चे जिज्ञासु के अंतरतम में अभिव्यक्त हो सकें।

वह रिक्ति बहुत आवश्यक है क्योंकि जब तक वह रिक्ति हमारे अंतरतम में प्रकट नहीं होती, हम वास्तविक महापुरुष के व्यक्तित्व को परख नहीं सकते। कारण स्पष्ट है, समय के महापुरुष के स्थूल शरीर में कोई अनूठापन नहीं होता। उनमें कोई बाहरी विशिष्ट लक्षण नहीं हुआ करते जिन्हें देखकर उनको पहचाना जा सके।

इस संदर्भ में आपके सामने एक बात स्पष्ट कर देना मैं आवश्यक समझता हूं कि मेरी उक्त बातों का मतलब यह न लगा लिया जाये कि समय के महापुरुष को परख पाना बहुत कठिन और असंभव कार्य है। वह कार्य कठिन नहीं है, वह अत्यंत सरल है। वह इतना सरल है कि उससे सरल कुछ हो ही नहीं सकता और उसकी यह सरलता ही इतनी दुर्लभ व कठिन है कि कोई सोच ही नहीं सकता कि वह इतना सरल भी हो सकता है।

लोगों के दिमाग में पहले से ही समय के महापुरुष के संबंध में नाना प्रकार की बातें भरी पड़ी हैं और उन्हीं मानकों को लेकर जब मनुष्य उन्हें पहचानने के लिए आगे बढ़ता है तो उसे सफलता नहीं मिल पाती। इसलिए स्पष्ट है कि लोगों द्वारा बताये जाने वाले तरह-तरह के लक्षणों के आधार पर महापुरुष को परखने की चेष्टा का परित्याग करना आवश्यक है। उसके लिए अपने अंतरतम में जो विशिष्ट प्यास जाग पड़ी है, उसको गहराई से महसूस करने, उस रिक्ति की परम भावना को बड़ी बारीकी से पकड़े रहने की जरुरत है। उसके अनुभव की बेड़ी में जकड़े रहने की जरूरत है, उससे एक पल के लिए भी बिछुड़ाव की कल्पना से पूरी तरह दूर रहने की जरूरत है।

इस प्रकार यदि हम उस महारिक्ति को लगातार महसूस करते रहेंगे तो अनायास हमारे अंदर यह शक्ति जाग्रत होने लगेगी, उस आकर्षण शक्ति के अनावृत होने की प्रक्रिया इस प्रकार जाग्रत हो जायेगी कि वह महान रिक्ति हमारे अंदर में बड़ी सरलता से प्रकट हो जायेगी जिसमें समय के महापुरुष पूरी समग्रता से प्रकट हो हमें वह तत्व ज्ञान, हमें वह सरल युक्ति प्रदान कर देंगे जिसमें हमें अपने ही नैसर्गिक स्वरूप के रूप में वह महारिक्ति हमारे अंतर्तम में भी मौजूद मिलेगी।

मैं यह बात बार-बार पूरा जोर देकर कहा करता हूं कि अपने अंतर्तम में उस विशिष्ट रिक्ति को महसूस करने के लिए किसी विशेष प्रकार के श्रम व चेष्टा की आवश्यकता नहीं पड़ती। वास्तव में हमारे भीतर जो स्वभाव पहले से ही स्थित है, नैसर्गिक रूप से उसका स्वभाव खाली रहना ही है, रिक्त रहना ही है और वह रिक्ति इतनी बड़ी होती है कि उसे पूरी तरह भरने में इस दुनिया की कोई भी शक्ति सक्षम नहीं।

इस बात को हम एक उदाहरण से भी समझने की कोशिश कर सकते हैं। जिस प्रकार दीपक का स्वभाव प्रकाश फैलाना है, यदि हम दीपक के रहते हुए कमरे के अंदर सैकड़ों बाल्टियों से अंधेरा उड़ेलते रहें तो भी उस दीपक की छोटी सी सत्ता हमारे द्वारा बाहर से डाले गये अंधेरों को अपने पास फटकने भी नहीं देगी। कारण स्पष्ट है, दीपक का नैसर्गिक स्वभाव अंधेरा दूर करना है। दीपक का वह प्राकृतिक स्वभाव अंधेरे को अपने पास फटकने भी नहीं देगा। हम दीपक के पास में अंधेरा करने में तब तक कामयाब नहीं हो पायेंगे जब तक दीपक की सत्ता दीपक के रूप में मौजूद है। यदि वह दीपक किसी वजह से बुझ जाये तो तत्काल वहां घोर अंधकार छा जाता है। किन्तु ज्योंही वहां किसी जलते हुए दीपक को लाया जाता है एक पल में ही पहले से छाये सम्पूर्ण अंधकार का नाश हो जाता है। जी हां, चाहे किसी गुफा में हजारों या लाखों साल से अंधेरा छाया हुआ हो, उसे हटाने के लिए किसी दीपक को ज्यादा देर करने की जरूरत नहीं पड़ेगी। अंधेरा एक दिन का हो या लाखों वर्षों का, दीपक के आने के बाद अंधेरे का नष्ट होना निश्चित है। क्योंकि दीपक का स्वभाव प्रकाश देने का है और कोई लाख चेष्टा कर ले, जब तक दीपक जलता रहेगा वहां कोई अंधेरा नहीं ला सकता।

इसी प्रकार हमारा स्वभाव मूलतः रिक्त होने का है और उस रिक्ति को लाख कोशिश के बावजूद भी पूरी तरह भरा नहीं जा सकता। हम अपने अंदर यदि कुछ भी भरने की कोशिश करेंगे तो वह हमारे नैसर्गिक स्वभाव के विपरीत कुछ कर दिखाने की चेष्टा मात्र होगी और निश्चित मानिये हम अपनी उस चेष्टा में कभी कामयाब नहीं हो पायेंगे। इस प्रकार जब हम अपने किसी भी चेष्टा में असफल होते हैं तो हमारे अंदर अनाहूत रूप से अवसाद भर जाता है, अपने असफल होने की व्यथा से हम व्यथित हो जाते हैं और निश्चित समझिये जब भी हम अपने अंदर की रिक्ति को बाहरी चीजों से भरने की कोशिश करेंगे हमारी वह चेष्टा अप्राकृतिक होगी और उसमें सफल न होने पर हमारे अहं को ठेस पहुंचेगी और हम असफल होने के दुख से व्यथित होते रहेंगे।

स्वभाव से विपरीत चलने की किसी भी चेष्टा का खामियाजा हमें दुख के रूप में, अवसाद के रूप में झेलना पड़ेगा। इस प्रकार हमारी भावनाओं को चोट लगेगी, हम विषाद से भरेंगे, हमारे अहंकार को चोट लगेगा और जब अहंकार को चोट लगेगी, वह आहत होगा, किसी के द्वारा दबाया जायेगा तो वह टूटेगा और निश्चित रूप से जब हमारा अहं टूटता है तो हमारी जान निकलने लगती है। हम किसी भी कीमत पर अपने अहं को बनाये रखना चाहते हैं। और अपने अहं को बनाये रखने के लिए जब भी कोई चेष्टा की जाती है, वह और भी सशक्त होकर हमारे अंदर में प्रकट होता रहता है।

लोगों के दिमाग में पहले से ही समय के महापुरुष के संबंध में नाना प्रकार की बातें भरी पड़ी हैं और उन्हीं मानकों को लेकर जब मनुष्य उन्हें पहचानने के लिए आगे बढ़ता है तो उसे सफलता नहीं मिल पाती। इसलिए स्पष्ट है कि लोगों द्वारा बताये जाने वाले तरह-तरह के लक्षणों के आधार पर महापुरुष को परखने की चेष्टा का परित्याग करना आवश्यक है। उसके लिए अपने अंतरतम में जो विशिष्ट प्यास जाग पड़ी है, उसको गहराई से महसूस करने, उस रिक्ति की परम भावना को बड़ी बारीकी से पकड़े रहने की जरुरत है।